एक और जीवन

डॉ॰ मुहम्मद समीउज़्ज़मा

क्रम

"दयावान, कृपाशील ईश्वर के नाम से।"

दो शब्द

इस जीवन के बाद क्या है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसके बारे में अधिकांश लोग सोचते ही नहीं! कुछ तो इस दुनिया के जीवन ही को सब कुछ समझते हैं। कुछ लोग अगर इस जीवन के बाद दूसरे जीवन को मानते भी हैं तो वे उसका क्या स्वरूप होगा इससे अनभिज्ञ हैं। इस प्रश्न को सामने रखकर लेखक ने यह पुस्तक तैयार की है। साथ-ही-साथ ये बातें भी बताई हैं कि इस जीवन के बाद आनेवाले जीवन के लिए क्या-क्या तैयारी करनी है। वर्तमान जीवन में हम क्या करें कि हमारा आनेवाला दूसरा जीवन ख़ुशहाल हो। आनेवाले जीवन की वास्तविकता क्या है और उसका इनकार करने से क्या परिणाम सामने आएँगे ये सारी बातें लेखक ने क़ुरआन की आयतों से साबित की हैं।

यह किताब उर्दू ज़बान में 'एक और ज़िन्दगी' के नाम से छप रही है। हिन्दी जाननेवालों के लिए इस किताब का हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। हमें उम्मीद है यह किताब लोगों को सोच-विचार करने पर आमादा करेगी और वे इससे फ़ायदा उठाएँगे।

—प्रकाशक

पत्र (1)

एक और जीवन

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

आपसे मेरा एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

क्या 'एक और जीवन' है हमारे वर्तमान जीवन (और मृत्यु) के बाद?

इस प्रश्न का उत्तर देने का समय वह नहीं होगा जब हम मृत्यु के निकट होंगे, बल्कि आज है!! क्योंकि उस समय अगर उत्तर मिल भी जाए तो उसका कोई फ़ायदा नहीं होगा। क्योंकि मृत्यु को टालकर बादवाले जीवन के लिए तैयारी का कोई अवसर हमको नहीं मिलेगा।

यदि आपको किसी दूर देश की यात्रा करनी है तो आप बहुत पहले से तैयारी करते हैं। वहाँ के मौसम के अनुकूल कपड़े और बिस्तर, वहाँ की आवश्यकताओं के लिए सामान, वहाँ ठहरने की जगह की व्यवस्था और ज़रूरी काग़ज़ों की तैयारी करते हैं।

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हम वर्तमान जीवन के बाद एक और जीवन की ओर बढ़ रहे हैं, मगर न कुछ जानकारी है, न उसका विश्वास है और न ही कोई तैयारी!

यह कैसी स्थिति है कि कुछ लोग उसकी तैयारी कर रहे हैं और कुछ को आनेवाले जीवन पर विश्वास ही नहीं है। कुछ सोचते हैं कि देखा जाएगा और कुछ अपनी ग़लत जानकारियों के अनुसार तैयारी कर रहे हैं।

मान लीजिए कि एक और जीवन नहीं है, तो तैयारी करनेवाले का कोई नुक़सान नहीं। वे बस मर गए और मिट्टी में मिल गए। लेकिन अगर एक

और जीवन है, तो तैयारी न करनेवाले कितने नुक़सान में होंगे?

मेरे पास इस सृष्टि के रचयिता की भेजी हुई पुस्तक पवित्र क़ुरआन है, जिसमें ईश्वर ने मनुष्य की बुद्धि और विवेक को सम्बोधित करते हुए तरह-तरह के उदाहरणों से यह विश्वास दिलाया है कि इस जीवन के बाद एक और जीवन है, और वही मनुष्य का वास्तविक जीवन है। वह कभी न समाप्त होनेवाला जीवन है। वर्तमान सांसारिक जीवन कुछ दिनों की परीक्षा की घड़ी है। अतः आनेवाले जीवन की सफलता वर्तमान जीवन में की गई तैयारी पर निर्भर करती है।

मैं इसी आधार पर आनेवाले जीवन की सफलता के लिए तैयारी कर रहा हूँ और चाहता हूँ कि इस संसार के सारे मनुष्य जो मेरे भाई-बहन हैं (जिनसे मुझे अत्यधिक प्यार है) उन्हें भी आनेवाले जीवन में सफल होने का मार्ग बताऊँ और उन्हें वहाँ की असफलता से बचाऊँ।

मैं उसी पुस्तक से जो मेरे पास है, जिसमें ईश्वर ने मनुष्य को तरह-तरह से समझाया है, आपको समझाने का प्रयास करूँगा। मुझे आशा है कि आप उसे पढ़कर सफलता की ओर आगे बढ़ेंगे। आपसे केवल यह निवेदन है कि आप मेरे सारे पत्रों को गम्भीरता से पढ़ें। विश्वास कीजिए, मैं आपका भला चाहता हूँ, क्योंकि मैं आपका भाई हूँ।

—आपका शुभचिंतक

पत्र (2)

क्या मृत्यु के बाद एक और जीवन संभव है?

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

पिछले पत्र में यह बात बताई गई थी कि मनुष्य के वर्तमान सांसारिक जीवन के बाद एक और जीवन है। आपको आश्चर्य हो सकता है कि भला यह कैसे संभव है? मनुष्य मर गया, मिट्टी में मिल गया, जलकर भस्म हो गया, उसे जानवरों ने खा लिया या वह समुद्र में डूब गया। भला वह फिर से कैसे जीवित हो सकता है?

इसके उत्तर में मैं अपने शब्दों में कोई तर्क नहीं दूँगा, क्योंकि मेरे शब्द उतने प्रभावशाली नहीं हो सकते जितने ईश्वर के शब्द हैं। जी हाँ! यह मेरे, आपके और समस्त जगत् के रचयिता और स्वामी के शब्द हैं। ये शब्द उस पुस्तक से लिए गए हैं, जो ईश्वर की एक ही प्रमाणित और सुरक्षित पुस्तक है, जो इस समय संसार में मौजूद है। आप यह न देखिए कि यह पुस्तक किस समुदाय के पास है, बल्कि यह देखिए कि इसमें कितनी सच्चाई है। इस पुस्तक में जीवन और सृष्टि की महान सच्चाइयों को मानव-जाति के सामने प्रस्तुत किया गया है। उनपर जीवन में कम-से-कम एक बार विचार करना हम सबकी ज़िम्मेदारी है। मनुष्य को मृत्यु के बाद फिर से जीवित करने और दूसरे जीवन के लिए उठाए जाने को हमारे रचयिता ने अपनी पुस्तक में विभिन्न ढंग से समझाया है। आइए इनपर विचार करें—

(1) क्या इनसान देखता नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया, और फिर वह प्रत्यक्ष झगड़ालू बनकर खड़ा हो गया? अब वह हमपर मिसालें चस्पाँ करता है और अपने जन्म को भूल जाता है। कहता है : कौन उन हड्डियों को जीवित करेगा, जबकि वे बोसीदा (जीर्ण) हो चुकी हों? उससे कहो : उन्हें

वही जीवित करेगा जिसने सर्वप्रथम उन्हें पैदा किया था, और वह पैदाइश के सभी कार्यों को जानता है।

(क़ुरआन, सूरा-36 यासीन, आयतें-77 से 79)

(2) क्या वह नहीं है जिसने पृथ्वी और आकाशों को बनाया, वह इसपर सक्षम नहीं है कि उन जैसों की रचना कर सके? क्यों नहीं, जबकि वह सृजन करने की पूरी शक्ति रखता है। वह तो जब किसी वस्तु का इरादा करता है तो उसका कार्य बस यह है कि उसे आज्ञा दे कि हो जा और वह होने लगती है। पवित्र व पावन है वह जिसके हाथ में हर वस्तु का सम्पूर्ण अधिकार है। और उसी की ओर तुम पलटाए जानेवाले हो।

(क़ुरआन, सूरा-36 यासीन, आयतें-81 से 83)

(3) और ईश्वर की निशानियों में से है कि तुम देखते हो धरती सूनी पड़ी हुई है, फिर ज्यों ही हमने उसपर जल बरसाया, अचानक वह फबक उठती है और फूल जाती है। निश्चय ही जो अल्लाह इस मरी हुई ज़मीन को जिला उठाता है वह मुर्दों को भी जीवन प्रदान करनेवाला है। निश्चय ही उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

(क़ुरआन, सूरा-41 हा-मीम सजदा, आयत-39)

(4) ये आकाशों व धरती और उनके बीच जो वस्तुएँ हैं हमने खेल के रूप में नहीं बनाया है। हमने उन्हें सच के साथ पैदा किया है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं हैं। उन सबके उठाए जाने के लिए निश्चित समय निर्णय का दिन है। (क़ुरआन, सूरा-44 दुख़ान, आयतें-38 से 40)

(5) क्या इन लोगों को सुझाई नहीं देता कि जिस ईश्वर ने ये पृथ्वी और आकाश पैदा किए इनको बनाते हुए वह न थका, वह ज़रूर इसकी सामर्थ्य रखता है कि मुर्दों को जिला उठाए? क्यों नहीं, यक़ीनन वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (क़ुरआन, सूरा-46 अहक़ाफ़, आयत-33)

इन तर्कों और समझाने के अन्दाज़ से आपको अनुमान हो गया होगा कि यह हमारे उस दयावान स्वामी की पुकार है जो अपने बन्दों से अत्यधिक मुहब्बत करता है। वह हमारी आँखों से ओझल अवश्य है, मगर वह हमारी

बुद्धि व समझ को इन प्रमाणों पर विचार करने और बिना देखे उनपर ईमान लाने का सन्देश दे रहा है। उम्मीद है कि आप अपने रचयिता की इन बातों पर शान्त मन से विचार करेंगे। क्योंकि इनपर ईमान लाने या इन्हें स्वीकार कर लेने का उपहार भी बहुत बड़ा है और इनको झुठलाने और इनका इनकार का दण्ड भी बड़ा कष्टदायक है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें समझ-बूझ से काम लेने और सीधा मार्ग पाने की योग्यता एवं शक्ति प्रदान करे। (आमीन!)

पत्र (3)

एक और जीवन को झुठलाने व इनकार करने से क्या कोई नुक़सान है?

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

आपके मन में यह ख़याल आ सकता है कि इस जीवन के बाद एक और जीवन के इस प्रश्न पर विचार ही क्यों किया जाए? अगर ऐसा हो भी तो हमारे मानने या न मानने से क्या अन्तर पड़नेवाला है? मगर मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन! यह बात इतनी सामान्य नहीं है, और न यह केवल एक दृष्टिकोण या आस्था और वाद-विवाद का विषय है, बल्कि यह पूर्णतः हमारे जीवन के उद्देश्य से जुड़ा विषय है। इसके मानने और न मानने पर हमारे सम्पूर्ण जीवन की सफलता और विफलता निर्भर करती है, बल्कि हमारा आनेवाला लाखों-करोड़ों वर्षों का जीवन कैसा होगा (सुख व आनन्द से भरा या कष्टों और यातनाओं से भरा) इसकी भी निर्भरता इसी बात के मानने या न मानने पर है। क्योंकि अगर इस एक और जीवन को मान लेंगे तो इसकी सफलता के लिए इसी जीवन में तैयारी करेंगे, और अगर न मानेंगे तो एक स्वच्छंद और मनमाना जीवन व्यतीत करेंगे। अभी हमें इसके मूल्य और महत्व का अनुमान नहीं है। क्योंकि अभी हम स्वस्थ हैं, और (हमारे विचार से) अभी हमारी मृत्यु होनेवाली नहीं है। परन्तु मेरे भाई/बहन! हमें पता है कि मृत्यु का कोई समय निर्धारित नहीं है। कौन कब और कहाँ अपने पालनहार से मिलने चला जाए इसका कोई भरोसा नहीं। हमें विचार करना चाहिए कि यह जीवन क्या है? क्यों है? और इसका उद्देश्य और परिणाम क्या है? जब हम हर चीज़ के उद्देश्य और परिणाम पर विचार करते हैं और उसके लिए तैयारी करते हैं तो फिर जीवन के बारे में क्यों नहीं सोचें?

मैं आपको अवगत कराना चाहता हूँ कि हमारा वर्तमान जीवन केवल

कुछ दिनों की परीक्षा है, और इसके बाद हमारे सारे कर्मों के रिकॉर्ड की जाँच-पड़ताल होगी और उसके बाद सफलता या विफलता के परिणाम के रूप में सुख व आनन्द से भरा सदैव का जीवन होगा या कष्ट और यातनाओं से भरा सदैव का जीवन।

जब यह बात सत्य बनकर सामने आ जाएगी वह बड़ा कठोर दिन होगा, और तैयारी के बिना उसका सामना करना बड़ा ही कष्टदायक और हानिकारक होगा। ईश्वर ने स्वयं उस दिन का चित्रण अपनी पुस्तक में किया है—

(1) ईश्वर ही सृष्टि का प्रारम्भ करता है। फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा, फिर उसी की ओर तुम पलटाए जाओगे। और जब वह घड़ी घटित होगी, उस दिन अपराधी निराश और हक्का-बक्का रह जाएँगे।

(क़ुरआन, सूरा-30 रूम, आयतें-11-12)

(2) और (महाप्रलय के दिन) जिसका लेखा-जोखा (कर्म-पत्र) उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा (अर्थात् असफलता का संकेत होगा) वह कहेगाः काश! मेरा लेखा-जोखा मुझे न दिया गया होता, और मैं न जानता कि मेरा हिसाब (आकलन) क्या है। काश! मेरी मृत्यु (जो संसार में आई थी) निर्णायक होती। आज मेरा धन मेरे कुछ काम न आया, मेरा सारा प्रभुत्व समाप्त हो गया। (क़ुरआन, सूरा-69 अल-हाक़्क़ा, आयतें-25 से 29)

(3) आज ये लोग कहते हैं कि जीवन जो कुछ भी है बस यही सांसारिक जीवन है और हम मरने के बाद कदापि न उठाए जाएँगे। काश! वह दृश्य तुम देख सको, जब यह अपने पालनहार (रब) के समक्ष खड़े किए जाएँगे। उस समय उनका रब उनसे पूछेगा : "क्या यह सत्य नहीं है?" ये कहेंगे कि "हाँ, ऐ हमारे रब! यह सत्य ही है।" वह कहेगा : "अच्छा! तो अब अपने सत्य को झुठलाने के कारण अज़ाब का मज़ा चखो।"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें-29-30)

आपने देखा—कैसा निर्णायक चरण होगा! और कैसी बेबसी व लाचारी की अवस्था होगी! जीवन के क्षण और परीक्षा की घड़ियाँ समाप्त हो चुकी

होंगी और हम अपने पालनहार (रब) के सामने ख़ाली हाथ खड़े होंगे तो कितने खेद और पछतावे की हालत होगी! क्या मैं और आप नहीं चाहेंगे कि हम अपने पालनहार के समक्ष अपमानित न हों और घाटे से बच जाएँ? और वह भी ऐसा घाटा जिसकी क्षतिपूर्ति का कोई अवसर फिर से न मिलेगा। क्योंकि हम फिर से संसार में वापस नहीं भेजे जाएँगे। तो फिर क्या हमारी यह ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम अभी से सच्चाई को जानने, मानने और उसके लिए तैयारी करने में लग जाएँ?

सोचिए! मेरे भाई/मेरी बहन! थोड़ी देर के लिए इसकी ओर ध्यान दीजिए। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। मुझे और आपको गम्भीरता से इसपर विचार करना चाहिए। यह मेरे, आपके और हमारे बाल-बच्चों के भविष्य के लम्बे जीवन, बल्कि वास्तविक जीवन का प्रश्न है।

ईश्वर मेरा और आपका भला करे!

पत्र (4)

आनेवाला जीवन ही वास्तविक जीवन है

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

एक और पत्र के साथ मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। इसमें मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हमारे वर्तमान जीवन के बाद आनेवाला एक और जीवन ही वास्तव में हमारा मूल जीवन है। हज़ारों-करोड़ों वर्ष का, बल्कि शाश्वत जीवन—जबकि वर्तमान जीवन तो बस एक छोटा-सा पड़ाव है, चालीस-पचास वर्ष, सत्तर-अस्सी वर्ष या अधिक-से-अधिक सौ-सवा सौ वर्ष। इसमें भी कब कौन और कहाँ अपनी यात्रा समाप्त कर दे किसी को पता नहीं। कभी छोटे-छोटे बच्चे भी आँखें बन्द कर लेते हैं और कभी जवान एवं स्वस्थ आदमी भी। ईश्वर ने तो हमें एक ऐसे जीवन के लिए पैदा किया है जहाँ कोई मृत्यु नहीं, कोई अन्त नहीं—मगर वह जीवन कैसा होगा (सुख से भरा या यातनाओं व कष्टों से भरा) इसका निर्णय हम स्वयं इस जीवन में करनेवाले हैं। हम अपनी बुद्धि एवं विवेक का इस्तेमाल करके अपने ईश्वर को पहचानते हैं और उसके आदेशों के अनुसार भले कर्म करते हैं, या शैतान के चेले बनकर उसके बताए हुए मार्ग पर चलते हैं।

आनेवाला जीवन ही वास्तविक जीवन है, और वर्तमान जीवन एक छोटा परीक्षा का पड़ाव है। उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया है हमारे स्रष्टा ने अपनी पुस्तक में। आइए मैं उसी के शब्दों के अर्थों को पेश करता हूँ, शायद कि ईश्वर के शब्दों का प्रभाव हमारे दिल की दुनिया बदल दे, या हमारी काया पलट कर दे—

(1) इनसे कहो, दुनिया के जीवन की पूँजी थोड़ी है, और आख़िरत (परलोक) एक ईश्वर से भय रखनेवाले मनुष्य के लिए अधिक उचित है, और

तुमपर कण समान भी अत्याचार न किया जाएगा।

(क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-77)

(2) वास्तव में सफल वह है, जो वहाँ नरक की आग से बच जाए और स्वर्ग में प्रवेश कर दिया जाए। रहा यह संसार तो केवल एक स्पष्ट धोके की वस्तु है। (क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-185)

(3) नुक़सान में पड़ गए वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने की सूचना को झूठ ठहराया। जब अचानक वह घड़ी आ जाएगी तो ये लोग कहेंगे : "हाय अफ़सोस! हमसे इस विषय में कैसी चूक हुई!" और उनकी दशा यह होगी कि अपनी पीठों पर अपने पापों का बोझ लादे हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जो ये उठा रहे हैं! संसार का जीवन तो एक खेल और तमाशा है। वास्तव में आख़िरत (परलोक) ही का ठिकाना उन लोगों के लिए अच्छा है जो ईश्वर से डरते हैं। फिर क्या तुम लोग बुद्धि से काम न लोगे?

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें-31-32)

सोचिए! शान्त मन से विचार कीजिए। हम कहाँ से आए हैं और हमें कहाँ जाना है? इसका उत्तर किसी को नहीं पता, सिवाए इसके कि ईश्वर का सन्देष्टा या उसकी पुस्तक हमें बताए। जब हम जीवन के हर छोटे-बड़े विषय पर विचार करते हैं, तो फिर जीवन के उद्देश्य पर क्यों विचार नहीं करते?

पत्र (5)

हमारा जीवन एक परीक्षा है

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

अगर आप और हम इस संसार के जीवन ही को सब कुछ समझ लें और यहाँ हर वैध और अवैध तरीक़े से दुनिया समेट लेने ही को सफलता समझें तो हमारा काम करने का तरीक़ा अलग होगा, और अगर इसको एक संक्षिप्त परीक्षा समझें तो हमारा रवैया बिलकुल अलग होगा। ईश्वर के सारे सन्देष्टा और उसकी अन्तिम पुस्तक हमें पुकार-पुकारकर कहती है कि देखो, यह संसार एक परीक्षा स्थल है और इसी के आधार पर आनेवाले सदैव के जीवन की सफलता और विफलता निर्भर है। इस सच्चाई को जाने बिना हम जीवन गुज़ारेंगे तो यह विद्रोह का या कम-से-कम लापरवाही का जीवन होगा और अचानक एक दिन मौत आकर हमें अपने परिणाम से सामना करा देगी। देखिए हमारा रचयिता अपनी पुस्तक में हमें किस प्रकार सचेत करता है—

(1) ऐ इनसानो! तुम्हारी यह सरकशी तुम्हारे अपने ही विरुद्ध पड़ रही है। संसार कुछ दिनों के जीवन के सुख का साधन है, फिर तुम्हें हमारी ही ओर पलटकर आना है, उस समय हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे हो? दुनिया के जीवन का उदाहरण ऐसा है जैसे आकाश से हमने वर्षा अवतरित की तो उसके कारण धरती की पैदावार, जिसे आदमी और चौपाए सब खाते हैं, बहुत घनी हो गई। फिर ठीक उस समय जबकि धरती अपने बहार पर थी, और खेतियाँ बनी-सँवरी खड़ी थीं, और उनके स्वामी समझ रहे थे कि अब हम उनसे लाभ उठाने पर सक्षम हैं, अचानक रात को या दिन को हमारा आदेश आ गया, और हमने उसे ध्वस्त व बरबाद करके रख दिया कि मानो कल वहाँ कुछ था ही नहीं। इस प्रकार हम निशानियाँ खोल-खोलकर पेश करते हैं, उन लोगों के लिए जो सोचने-समझनेवाले हैं।

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयतें-23-24)

(2) वास्तविकता यह है कि ये जो कुछ धन-सामग्री भी धरती पर है, उसको हमने धरती का शृंगार बनाया है, ताकि उन लोगों की परीक्षा लें कि उनमें कौन अच्छे कर्म करनेवाला है। अन्तिम रूप में इन सबको हम एक चटियल मैदान बना देनेवाले हैं। (क़ुरआन, सूरा-18 कह्फ़, आयतें-7-8)

(3) क्या तुमने आख़िरत (अर्थात् मरने के बादवाले जीवन) के मुक़ाबले में सांसारिक जीवन को चुन लिया? ऐसा है तो तुम्हें पता हो कि सांसारिक जीवन की धन-सामग्री आख़िरत में बहुत थोड़ी निकलेगी।

(क़ुरआन, सूरा-9 तौबा, आयत-38)

(4) अल्लाह जिसे चाहता है (संसार में) प्रचुर मात्रा में आजीविका प्रदान करता है और जिसे चाहता है नपी-तुली आजीविका प्रदान करता है। ये लोग सांसारिक जीवन में मगन हैं, हालाँकि सांसारिक जीवन आख़िरत के मुक़ाबले में एक थोड़ी सुख-सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं।

(क़ुरआन, सूरा-13 रअद, आयत-26)

आपने देखा? संसार का वर्तमान जीवन एक अल्पकालिक परीक्षा है, और यह वह स्थान है जहाँ हम आनेवाले करोड़ों वर्षों से अधिक के जीवन की सफलता या विफलता के लिए काम कर रहे हैं। क्या हम लोग इन सारी सच्चाइयों से अज्ञात रहकर, एक असावधान और लापरवाह जीवन गुज़ारेंगे या सत्य की खोज करके उसके अनुसार प्लानिंग करेंगे? आज यह निर्णय हमारे अधिकार में है, और इसका परिणाम हमारे समक्ष होगा, मगर उस समय हमारे पास कर्म का समय न होगा—सोचिए—थोड़ी देर विचार कीजिए।

पत्र (6)

समाप्त न होनेवाला सुखी जीवन

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

अगर मुझे किसी बड़े ख़ज़ाने या बड़े लाभ की सूचना मिले, तो मैं स्वयं भी लाभ उठाना चाहूँगा और अपने सारे निकटतम लोगों को भी उसकी सूचना दूँगा। यह मनुष्य का स्वभाव है। अब परलोक (आख़िरत) के करोड़ों वर्षों से अधिक के सुखी और उपहारों से भरे जीवन की मुझे सूचना मिले, और मैं उसको पाने की इच्छा एवं कामना न करूँ और अपने भाई-बहनों को उसकी सूचना न दूँ, यह कैसे हो सकता है! इसी भावना से मैं आपको इसकी सूचना देना और उसकी इच्छा जागृत करने के लिए उसके विषय में कुछ बताना चाहता हूँ। ईश्वर की पुस्तक में इसकी झलकियाँ पेश की गई हैं। हमारे रचयिता, स्वामी और पालनहार ने उसको पाने का शौक़ दिलाया है, क्योंकि उसको पाना ही मनुष्य की सबसे बड़ी सफलता है। मैं अपने शब्दों के बजाय अपने रचयिता के शब्दों का अर्थ पेश करूँगा, ताकि मेरा और आपका शौक़ बढ़े और हम जान लें कि वह कैसा सुखद और समृद्ध जीवन है। वह हमारे सपनों और हमारी कल्पनाओं से बढ़कर सुन्दर है—

(1) परहेज़गार लोगों के लिए जिस स्वर्ग का वचन लिया गया है, उसकी शोभा तो यह है कि उसमें नहरें बह रही होंगी निथरे हुए जल की। नहरें बह रही होंगी ऐसे दूध की जिसके स्वाद में थोड़ा भी अन्तर न आया होगा। नहरें बह रही होंगी ऐसे पेय-पदार्थ की जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट होंगे। नहरें बह रही होंगी पवित्र व निर्मल शहद की। उसमें उनके लिए हर प्रकार के फल होंगे और उनके पालनहार की ओर से बख़शिश (मुक्ति)।

(क़ुरआन, सूरा-47 मुहम्मद, आयत-15)

(2) और ऐ पैग़म्बर! जो लोग इस पुस्तक पर ईमान ले आएँ और

(इसके अनुसार) अपने कर्म ठीक कर लें, उन्हें सुखद समाचार सुना दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उन बाग़ों के फल रूप में सांसारिक फलों से मिलते-जुलते होंगे। जब कोई फल उन्हें खाने के लिए दिया जाएगा तो (वे) कहेंगे कि ऐसे ही फल इससे पूर्व संसार में हमको दिए जाते थे। उनके लिए वहाँ पवित्र पत्नियाँ होंगी, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।
(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-25)

(3) सदैव रहनेवाले स्वर्ग हैं, जिनमें ये लोग प्रवेश करेंगे। वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोतियों से आभूषित किया जाएगा। वहाँ उनका वस्त्र रेशम का होगा। और वे कहेंगे कि "शुक्र है उस ईश्वर का जिसने हमसे दुख दूर कर दिया, निस्सन्देह हमारा रब (पालनहार) क्षमा करनेवाला और गुणग्राहक है। जिसने हमें अपने अनुग्रह से शाश्वत आवास के स्थान पर ठहराया, अब यहाँ न हमें कोई कठिनाई पेश आती है और न थकान महसूस होती है। (क़ुरआन, सूरा-35 फ़ातिर, आयतें-33 से 35)

(4) भले लोग (स्वर्ग में) ऐसे पेय पिएँगे जिनमें कपूर-जल का मिश्रण होगा, यह एक बहता स्रोत होगा जिससे ईश्वर के भक्त पेय पिएँगे और जहाँ चाहेंगे सरलता के साथ उसकी शाखाएँ निकाल लेंगे.....वहाँ वे ऊँची मसनदों (गद्दियों) पर तकिए लगाए बैठे होंगे। न उन्हें धूप की गरमी सताएगी न जाड़े की ठण्ड। स्वर्ग की छाँव उनपर झुकी हुई छाया कर रही होगी, और उसके फल हर समय उनके निकट होंगे। उनके आगे चाँदी के बर्तन और शीशे के प्याले घुमाए जा रहे होंगे। शीशे भी वे जो चाँदी के प्रकार के होंगे। और उनको ठीक अनुमान के अनुसार भरा गया होगा......वहाँ जिधर भी देखोगे उपहार-ही-उपहार और एक बड़े राज्य की सामग्री तुम्हें दिखाई देगी। उनके ऊपर बारीक रेशम के वस्त्र और अतलस और दीबा के वस्त्र होंगे, उनको चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब (पालनहार) उनको अत्यन्त पवित्र पेय पिलाएगा। यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारी कारगुज़ारी जो सम्मान के योग्य ठहरी है। (क़ुरआन, सूरा-76 अद-दहर, आयतें-5 से 22)

(5) दौड़कर चलो उस मार्ग पर जो तुम्हारे रब के क्षमादान और उस स्वर्ग की ओर जाती है जिसका विस्तार धरती और आकाशों जैसा है, और

वह (भले) लोगों के लिए तैयार की गई है।

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-133)

देखा आपने, कैसा सुन्दर जीवन और कैसे महान नेमतों का शुभ-समाचार है हमारे पालनहार की ओर से! और उसके लिए ऐसी नेमतों को तैयार करना क्या कठिन है, जबकि उसने सारी सृष्टि बनाई है! उसने अपने बन्दों के लिए ये सारी नेमतें तैयार कर रखी हैं, शर्त यह है कि हम बिना देखे उसके शुभ-समाचार पर विश्वास करें और उसे देखे बिना उसपर ईमान लाएँ और उसके आदेशानुसार जीवन बिताएँ, जिसकी ओर उसके हज़ारों पैग़म्बरों ने बुलाया है, और उसका विस्तृत वर्णन उसकी भेजी हुई पुस्तक में मौजूद है।

क्या मेरा दायित्व या ज़िम्मेदारी नहीं है कि जब मुझे ये बातें पता चल गई हैं तो उनकी जानकारी अपने सारे बहन-भाइयों को दूँ, और क्या अब आपका दायित्व नहीं है कि आप इन बातों पर गम्भीरता से विचार करें? अगर आप और मैं उन्हें मनगढ़ंत और असम्भव जानकर इससे लापरवाही बरतेंगे तो क्या हम घाटा नहीं उठाएँगे?

ईश्वर हमें सीधा मार्ग दिखाए!

पत्र (7)

हाय वह भयानक स्थान!

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

क्या आपने कभी विचार किया है कि ईश्वर ने हमें किन नेमतों (उपहारों) के साथ संसार में पैदा किया है? पैदा होने से पूर्व माँ की छाती में हमारे लिए दूध का प्रबन्ध किया। माँ-बाप के हृदय में हमारा प्रेम डाल दिया। आँखें दीं जिनसे हम देखते हैं, हाथ और पैर दिए, बुद्धि और समझ दी, ताकि हम अच्छा जीवन गुज़ारें, इस बुद्धि को प्रयोग करके अपने ईश्वर को पहचानें और अच्छा और भला जीवन बिताएँ। हमारे मार्गदर्शन के लिए पैग़म्बरों को भेजा। पुस्तकें भेजीं। माना कि हमने उन नेमतों (अनुकम्पाओं) को न पहचाना, उनका दुरुपयोग किया, अपने माँ-बाप को छोड़ दिया, उन्हें दुख एवं कष्ट पहुँचाया, लोगों पर अत्याचार किए, किसी की हत्या की, किसी को सताया, किसी की सम्पत्ति अवैध रूप से हड़प ली, तो क्या आप समझते हैं कि हमें जीवन देनेवाला ईश्वर इतना लापरवाह है कि उसने मनुष्यों और जगत् को पैदा करके यूँ ही छोड़ दिया है, अब उनकी कोई ख़बर नहीं लेता। अच्छे लोगों के लिए कोई पुरस्कार नहीं, और अत्याचारियों के लिए कोई दण्ड नहीं? जिन लोगों ने जीवन-भर भलाई का मार्ग चुनकर दुख-भरा जीवन गुज़ारा उनके लिए कोई अच्छा बदला नहीं? जिन लोगों ने जीवन-भर ईश्वर की उपासना नहीं की और संसार में अत्याचार एवं अन्याय करते रहे और उन्हें कभी कोई दण्ड नहीं मिला, क्या ऐसे लोगों की कोई पकड़ नहीं? क्या कभी उनको दण्ड नहीं मिलेगा? नहीं, नहीं—ईश्वर ऐसा कभी नहीं करेगा, उसने अत्याचारियों को पकड़ने और कठोर दण्ड देने की उचित व्यवस्था कर रखी है, जहाँ वे अपनी ग़लत करतूतों का पूरा-पूरा दण्ड पाएँगे। ऐसे लोगों के लिए ईश्वर ने नरक तैयार कर रखा है। नरक में कठोर दण्ड उनकी प्रतीक्षा

में हैं। भला नरक बनाना ईश्वर के लिए क्या कठिन है जिसने सूर्य जैसा दहकता गोला बनाकर लोगों के समक्ष रख दिया है, जो सदियों से दहक रहा है।

मेरा आपसे निवेदन है कि आप उन बातों पर शान्त मन से विचार करें। मुझे आपसे मुहब्बत है, बल्कि हर मनुष्य से मुहब्बत है। मैं नहीं चाहता कि मेरी या आपकी एक उंगली भी नरक की आग में जले। मैं डॉक्टर हूँ, जानता हूँ कि बड़े-से-बड़ा व्यक्ति चाहे वह कितनी ही अधिक सहनशक्ति रखनेवाला क्यों न हो, जब वह बीमार हो जाता है, कष्ट और पीड़ा के कारण कराहता है, तो उसके अन्दर का निश्छल और घबराया हुआ व्यक्ति बाहर आ जाता है और वह एक बच्चा लगने लगता है। मुझे बहुत दया आती है उसे और उसके परेशान सम्बन्धियों को देखकर। मैं सोचता हूँ, काश लोगों को उस समय की स्थिति का हाल मालूम होता जहाँ की पीड़ाएँ यहाँ के कष्टों से हज़ारों-हज़ार गुना अधिक हैं! जिस प्रकार हम यहाँ की पीड़ा व कष्ट को दूर करने का प्रयास करते हैं, काश वहाँ के सम्बन्ध में भी कुछ करते! नरक के कष्ट का अनुमान करने के लिए आप कभी अपनी जली हुई उंगली के कष्ट का आभास कीजिए, ईश्वर हम सबको आग के अज़ाब (यातना) से बचाए।

मैं ईश्वर की पुस्तक से उस दृश्य को सामने रखता हूँ जो नरक के सम्बन्ध में ईश्वर ने हमारे समक्ष पेश किया है और हमें उससे बचने के लिए सतर्क भी किया है और उससे बचने का मार्ग भी बताया है। न्याय व निष्पक्षता उसका गुण है। केवल दया करके अत्याचारियों को पीड़ितों के साथ स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा, बल्कि न्याय करके अत्याचारियों को उनकी करतूतों का दण्ड भी देगा—

(1) और जिन लोगों ने इनकार किया है, उनके लिए नरक की आग है। न उनका क़िस्सा ख़त्म कर दिया जाएगा कि मर जाएँ और न उनके लिए नरक की यातना में कोई कमी की जाएगी। इस प्रकार हम बदला देते हैं, हर उस व्यक्ति को जो इनकारी हो। वह वहाँ चीख़-चीख़कर कहेंगे कि "ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल ले, ताकि हम अच्छे कर्म करें उन कर्मों से विभिन्न जो पहले करते रहे थे।" (उन्हें उत्तर दिया जाएगा) "क्या हमने तुमको

इतनी आयु न दी थी जिसमें कोई शिक्षा ग्रहण करना चाहता तो शिक्षा ग्रहण कर सकता था? और तुम्हारे पास चेतावनी देनेवाला भी आ चुका था। अब मज़ा चखो, अत्याचारियों का यहाँ कोई सहायक नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-35 फ़ातिर, आयतें-36-37)

(2) बोलो, क्या यह (स्वर्ग की) मेहमाननवाज़ी (आतिथ्य) अच्छी है या जक़्क़ूम का वृक्ष? हमने उस वृक्ष को अत्याचारियों के लिए परीक्षा बना दिया है। वह एक वृक्ष है जो नरक के निचले स्थान से निकलता है। उसके गाभें ऐसे हैं जैसे शैतानों के सिर। नरक के लोग उसे खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे, फिर उसपर पीने के लिए उनको खौलता हुआ पानी मिलेगा और उसके बाद उनकी वापसी उसी नरक की भड़कती आग की ओर होगी। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह (पथभ्रष्ट) पाया और उन्हीं के पदचिह्न पर दौड़ चले। (क़ुरआन, सूरा-37 साफ़्फ़ात, आयतें-62 से 70)

(3) जिन लोगों ने अपने रब (पालनहार) का इनकार किया है उनके लिए नरक का अज़ाब (यातना) है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें फेंके जाएँगे तो उसके दहाड़ने की अत्यन्त भयानक आवाज़ सुनेंगे और वह उत्तेजित हो रही होगी, ग़ुस्से (प्रकोप) की उग्रता से फटी जाती होगी। हर बार कोई गरोह उसमें डाला जाएगा उससे (नरक के) कर्मचारी उनसे पूछेंगे, "क्या तुम्हारे पास कोई सावधान करनेवाला नहीं आया था?" वे उत्तर देंगे, "हाँ, सावधान करनेवाला हमारे पास आया था, मगर हमने उसे झुठला दिया और कहा कि अल्लाह (ईश्वर) ने कुछ भी अवतरित नहीं किया है, तुम बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।" और वे कहेंगे, काश हम सुनते या समझते तो आज भड़कती हुई आग के भागी न होते!" इस प्रकार वे अपने दोष को स्वयं स्वीकारेंगे। लानत व फिटकार है उन नारकियों पर!

(क़ुरआन, सूरा-67 मुल्क, आयतें-6 से 11)

(4) और जिसका कर्म-फल बाएँ हाथ में दिया जाएगा, वह कहेगा, "काश, मेरा कर्म-फल मुझे न दिया गया होता, और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है! काश, मेरी वही मृत्यु (जो संसार में हुई थी) निर्णायक होती! आज मेरा धन मेरे कुछ काम न आया। मेरा सारा प्रभुत्व समाप्त हो गया।"

(आदेश होगा) पकड़ो इसे, और इसकी गर्दन में तौक़ (पट्टा) डाल दो, फिर इसे नरक में झोंक दो, फिर इसे सत्तर हाथ लम्बी ज़ंजीर में जकड़ दो। यह न सर्वोच्च व श्रेष्ठ अल्लाह (ईश्वर) पर ईमान लाता था और न दरिद्र (मुहताज) को भोजन कराने पर उभारता था। इसलिए आज न इसका कोई हमदर्द है और न घावों के धोवन के अतिरिक्त इसके लिए कोई भोजन जो केवल अपराधियों के भोजन के लिए है।

(क़ुरआन, सूरा-69 हाक़्क़ा, आयतें-25 से 37)

(5) अतः ऐ नबी! धैर्य रखो, नम्र तथा सुशील धैर्य। ये लोग उसे (प्रलय के दिन को) दूर समझते हैं, और हम उसे निकट देख रहे हैं। जिस दिन आकाश पिघली हुई चाँदी के प्रकार का हो जाएगा, और पर्वत रंग-बिरंग के धुनके हुए ऊन के प्रकार जैसे हो जाएँगे। और कोई घनिष्ट मित्र, अपने घनिष्ट मित्र को न पूछेगा, हालाँकि वे एक-दूसरे को दिखाए जाएँगे। अपराधी चाहेगा कि उस दिन की यातना से बचने के लिए अपनी सन्तान को, अपनी पत्नी को, अपने भाई को, अपने निकटतम कुटुम्ब को जो उसे शरण देनेवाला था और सम्पूर्ण पृथ्वी के सारे लोगों को दण्ड राशि (फ़िदया) में दे दे और यह उपाय उसे मुक्ति दिला दे। कदापि नहीं, वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो मांस और त्वचा को चट कर जाएगी, पुकार-पुकारकर अपनी ओर बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिसने सत्य से मुँह मोड़ा और पीठ फेरी, धन जमा किया और सैंत-सैंतकर रखा।

(क़ुरआन, सूरा-70 मआरिज, आयतें-5 से 18)

(6) और तुम क्या जानो कि क्या है वह नरक? न शेष रखे न छोड़े। चमड़ी झुलसा देनेवाली। (क़ुरआन, सूरा-74 मुद्दस्सिर, आयतें-27 से 29)

मेरे प्यारे भाई/बहन! देखा! आपने रोंगटे खड़े कर देनेवाला नरक का दृश्य मेरे और आपके रब (पालनहार) ने खोल-खोलकर दिखा दिया है। क्या अब भी मुझे और आपको कोई भय नहीं होता? अगर हमें प्रमाण चाहिए कि कोई नरक है तो इसका क्या प्रमाण है कि नरक नहीं है? ईश्वर के हज़ारों बन्दों ने हर युग में अत्याचार व अन्याय सहन करके भी ये बातें बताईं और बिना किसी सांसारिक बदले की आशा के बताईं और ईश्वर की पुस्तकों में

ये मौजूद हैं तो उससे बढ़कर हमको क्या प्रमाण चाहिए!

जिस ईश्वर ने हमें बनाया, जबकि हम कुछ भी नहीं थे और जिसने इतना बड़ा जगत् बनाया, क्या वह स्वर्ग और नरक नहीं बना सकता? जिसने सूर्य बनाया और सूर्य से बड़े करोड़ों तारेगण जो आकाश में तैर रहे हैं क्या वह इतना असहाय है कि अपने अपराधी बन्दों को दण्ड देने के लिए कोई व्यवस्था न करे।

हमारी समझदारी इसी में है कि हम गम्भीरता से इन प्रश्नों पर विचार करें, और इन प्रश्नों को टाल न दें। किसे पता कि हमारी समय-सीमा कब समाप्त हो जाए?

ईश्वर हमारी सहायता करे!

पत्र (8)

सदैव का सुखद जीवन पाने का रहस्य

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

चालीस-पचास वर्षों का सुखद जीवन पाने के लिए हम बचपन से जवानी तक रात-दिन प्रयास करते हैं। पढ़ते-लिखते, कला-कौशल सीखते और कठिन परिश्रम करते हैं। हमारे माता-पिता, सगे-सम्बन्धी और अध्यापक रात-दिन हमपर पैसा, परिश्रम और समय लगाते हैं तब कहीं जाकर हम एक सुखद जीवन गुज़ारने के योग्य बनते हैं। मगर कितने दिनों का जीवन? दस वर्ष, बीस वर्ष या अधिक-से-अधिक पचास-साठ वर्ष। उसकी भी कोई गारंटी नहीं कि हम कितनी अवधि तक ऐसे जीवन से लाभ उठाते हैं। और लाभ उठाते भी हैं या रोगी बनकर या अपने किसी प्रिय से वंचित होकर एक निरानन्द जीवन-यापन कर रहे होंगे। अब आप विचार कीजिए, मृत्यु के पश्चात् आनेवाले करोड़ों वर्षों के बल्कि सदैव के सुखद जीवन के लिए हमें कितना परिश्रम करना होगा? क्या-क्या करना होगा?

स्पष्ट है कि हमें इसके लिए स्वर्ग को बनानेवाले की इच्छा के अनुसार काम करना होगा जो हमारा रचयिता एवं स्वामी भी है। उसने हमारे मार्गदर्शन के लिए सन्देष्टा भेजे और पुस्तकें अवतरित की हैं। उसकी इच्छा पता किए बिना अपनी पसन्द का वह काम जिसे हम अच्छा समझते हैं कर लेने से हम ईश्वर के प्रिय-पात्र नहीं बन सकते। फिर हमारी पसन्द का भी क्या भरोसा कि जिसे हम अच्छा काम समझकर करें वह वास्तव में अच्छा है, या नहीं। इस कारण यह बात आवश्यक है कि ईश्वर की मरज़ी या आशय पता किया जाए। दयालु रचयिता एवं स्वामी ने अपनी मरज़ी से लोगों को अवगत कराने के लिए अपने सन्देष्टा भेजे और उनके माध्यम से अपनी पुस्तकें भेजीं। क़ुरआन उसी की भेजी हुई पुस्तक है जो अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर अवतरित हुई। उसकी कुछ पंक्तियों का अनुवाद आपके समक्ष रखता हूँ जिससे पता चल सके कि वह क्या चाहता

है? हम कैसा जीवन व्यतीत करें कि स्वर्ग के अधिकारी बन सकें? अगर वह चाहता तो इतनी कठिन शर्तें सामने रख सकता था कि मनुष्य कठिनाई में पड़ जाता, पीड़ाओं से परेशान हो जाता, मगर वह ईश्वर जो बड़ा दयालु है, हमारा स्वामी और पालनहार है, जो हमसे अपार मुहब्बत करता है, उसने कठिन काम करने को नहीं कहा, बल्कि आसान-सी और इनसान के स्वभाव के अनुकूल बातें बताईं। अगर दया और कृपा करनेवाले ईश्वर को अपना एक ही ईश्वर स्वीकार कर लें, उसके साथ किसी को भी किसी भी रूप में साझी न ठहराएँ और उसकी बताई हुई बातों के अनुसार जीवन गुज़ारें तो फिर हम सफल हैं। करोड़ों वर्षों से अधिक, बल्कि सदैव सुखद जीवन बिताने के पात्र हैं, और वास्तव में यही अस्ल सफलता है। आइए ईश्वर की पुस्तक से वे बातें मालूम करें जो वह हमसे चाहता है–

(1) जो लोग ईमान लाएँगे (ईश्वर, सन्देष्टा और प्रलय-दिवस आदि पर) और अच्छे कर्म करेंगे वही स्वर्गवाले हैं और स्वर्ग में वे सदैव रहेंगे।

(क़ुरआन, सूरा-2 बक़रा, आयत-82)

(2) और वह (स्वर्ग) ईश्वर से उन डरनेवाले लोगों के लिए तैयार किया गया है जो प्रत्येक दशा में अपने धन को ख़र्च करते हैं, चाहे वे बुरी दशा में हों या अच्छी दशा में, जो क्रोध को पी जाते हैं और दूसरों के क़ुसूर व ग़लतियों को क्षमा कर देते हैं। ऐसे भले लोग ईश्वर को बहुत प्रिय हैं। और जिनकी दशा यह है कि अगर कभी कोई अश्लील कार्य उनसे हो जाता है या किसी गुनाह में पड़कर वे अपने ऊपर अत्याचार कर बैठते हैं तो उसी समय ईश्वर उन्हें याद आ जाता है और उससे वे अपने गुनाहों (पापों) की क्षमा माँगते हैं। क्योंकि ईश्वर के सिवा और कौन है जो पापों की क्षमा दे सकता हो? और वे जान-बूझकर अपने किए पर आग्रह नहीं करते। ऐसे लोगों का बदला उनके पालनहार की ओर से यह है कि वह उनको क्षमा कर देगा और ऐसे बाग़ों में उन्हें प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे वहाँ सदैव रहेंगे। कैसा अच्छा बदला है भले कर्म करनेवालों के लिए!

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतें-133 से 136)

(3) ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, ये सब एक-दूसरे के

साथी हैं, भलाई का आदेश देते और बुरे कामों से रोकते हैं, नमाज़ का आयोजन करते हैं, ज़कात देते हैं और ईश्वर और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करते हैं। ये वे लोग हैं जिनपर ईश्वर की दयालुता व कृपा अवतरित होकर रहेगी, वास्तव में ईश्वर को सबपर प्रभुत्व प्राप्त है और वह तत्वदर्शी और सर्वज्ञ है। (क़ुरआन, सूरा-9 तौबा, आयत-71)

(4) अल्लाह की ओर बार-बार पलटनेवाले (अर्थात् पापों पर क्षमा माँगनेवाले), उसकी उपासना व पूजा करनेवाले, उसकी प्रशंसा का गुणगान करनेवाले, उसके लिए धरती पर चक्कर लगानेवाले, उसके आगे झुकने और सजदे करनेवाले, भलाई का आदेश देनेवाले, बुराई से रोकनेवाले और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करनेवाले, और ऐ मुहम्मद! इन ईमानवालों को शुभ-समाचार सुना दो। (क़ुरआन, सूरा-9 अत-तौबा, आयत-112)

(5) भला यह किस प्रकार सम्भव है कि वह व्यक्ति जो तुम्हारे रब (पालनहार) की उस पुस्तक को जो उसने तुम्हारी ओर अवतरित की है सत्य जानता है, और वह व्यक्ति जो उसकी वास्तविकता की ओर से अंधा है, दोनों समान हो जाएँ? नसीहत (हितोपदेश) तो बुद्धिमान लोग ही माना करते हैं। और उनकी व्यवहार-नीति यह होती है कि ईश्वर के साथ अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं, उसे मज़बूत बाँधने के पश्चात् तोड़ नहीं डालते। और उनकी नीति यह होती है कि ईश्वर ने जिन-जिन नाते व सम्बन्धों को जोड़ने का आदेश दिया है उन्हें जोड़े रखते हैं और अपने रब (पालनहार) से डरते हैं और इस बात से डरते हैं कि कहीं उनसे बुरी तरह हिसाब न लिया जाए। उनकी दशा यह होती है कि अपने ईश्वर की प्रसन्नता के लिए धैर्य से काम लेते हैं, नमाज़ का आयोजन करते हैं, हमारे दिए हुए रिज़्क़ (रोज़ी) में से खुले और छिपे ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दूर करते हैं। आख़िरत का घर (यानी जन्नत) उन्हीं लोगों के लिए है।

(क़ुरआन, सूरा-13 अर-रअद, आयतें-19 से 22)

(6) ये वे (स्वर्ग में प्रवेश करनेवाले) लोग होंगे जो (संसार में) प्रतिज्ञा (नज़्र) पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी आफ़त हर ओर फैली

होगी। और ईश्वर के प्रेम में लाचार और अनाथ और क़ैदी को भोजन कराते हैं। और उनसे कहते हैं कि "हम तुम्हें केवल ईश्वर के लिए भोजन करा रहे हैं, हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं न धन्यवाद। हमें तो अपने पालनहार से उस दिन के अज़ाब व दण्ड से भय लगता है जो अत्यन्त कठिनाईवाला अत्यन्त लम्बा दिन होगा। अतः ईश्वर उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लेगा और उन्हें ताज़गी और आनन्द प्रदान करेगा। और उनके धैर्य के बदले में उन्हें स्वर्ग और रेशमी वस्त्र देगा। (क़ुरआन, सूरा-76 दह्र, आयतें-7 से 12)

मेरे प्रिय भाई/बहन! देखा आपने! स्वर्ग और सदैव का ऐसा जीवन प्राप्त करने के लिए ईश्वर ने ऐसी कठिन माँगें नहीं कीं कि जिनको इनसान पूरा करने में असमर्थ हो। उदाहरणत के लिए यह नहीं कहा कि अपने पैर काटकर अपना रक्त बहाओ, अंगारों पर चलो, पहाड़ों को काटकर नदी बहाओ। नहीं, बल्कि ऐसी बातें कहीं जो स्वयं हमारे सांसारिक जीवन के लिए भली भी हैं और उनपर चलना सम्भव और आसान भी है। अब अगर हम ईश्वर ही को न पहचानें, उसे छोड़कर अपने बनाए हुए उपास्यों की पूजा करें, हत्या करें, .ख़ून बहाएँ, अपनी मनेच्छाओं के दास बनकर बुराइयाँ करें तो हमसे बढ़कर मूर्ख और अत्याचारी कौन होगा?

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

मैं यह नहीं कहता कि आप बुरे हैं, अपनी मनेच्छाओं के दास बनकर बुराइयाँ कर रहे हैं, रक्त बहा रहे हैं। मैं तो आपसे केवल इतना निवेदन कर रहा हूँ कि अपने सच्चे ईश्वर को पहचानें, केवल उसी के आगे सिर झुकाएँ और उसी के आगे हाथ फैलाएँ। आप भलाइयाँ और अच्छे कर्म तो कर ही रहे हैं, बस यह और करें कि ईश्वर की मरज़ी मालूम करके उसके अनुसार अपने कर्मों को ढाल लें और ये सारे काम केवल उसी की प्रसन्नता के लिए करें। फिर देखिए ईश्वर कैसे आपसे प्रसन्न हो जाता है और आपको अपनी अनुकम्पाओं से मालामाल कर देता है।

उम्मीद है कि आप मेरी बातों को सकारात्मक रूप में लेंगे, और विचार करके अच्छा क़दम उठाएँगे। अल्लाह (ईश्वर) हम सबकी सहायता करे। आमीन!

पत्र (9)

कौन लोग भड़कती हुई आग में फेंके जाएँगे?

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

हममें से कोई नहीं चाहेगा कि हमारा रचयिता, हमारा पालनहार और हमारा ईश्वर हमसे अप्रसन्न होकर हमें भड़कती हुई आग में झोंक दे। हमें अपना सारा जीवन इसका प्रयास करना चाहिए कि हम अपने रचयिता को प्रसन्न रख सकें और वह हमसे अपनी दया की दृष्टि न फेर ले। स्पष्ट बात यह है कि किसी की अप्रसन्नता से बचाव के लिए पहले यह मालूम करना आवश्यक होता है कि वह किन चीज़ों को और कैसी जीवनशैली को पसन्द करता है। जब तक किसी की पसन्द या नापसन्द मालूम न हो, हम उसको प्रसन्न कर ही नहीं सकते। यही बात ईश्वर के बारे में भी सच है। जब हम इस संसार में इनसान के रूप में पैदा किए गए हैं और बुद्धि और विवेक रखते हैं तो यह बात हमारे लिए शोभा नहीं देती है कि हम पशुओं की तरह जीवन व्यतीत करें और यहाँ से चले जाएँ, या अपने बाप-दादा के मार्ग पर ही चलते रहें, चाहे वे सत्य और भलाई के मार्ग से हटे हुए हों।

नहीं, हमें तो चाहिए कि सत्य की खोज करें चाहे वह किसी के भी पास हो। क्योंकि सत्य तो हर हाल में सत्य है, और वह भी ऐसा सत्य जिसका सम्बन्ध हमारे सारे जीवन, बल्कि जीवन के उद्देश्य से है। और जिसमें असफलता हमारे सारे जीवन की असफलता है। केवल हमारी ही नहीं, बल्कि हमारी आनेवाली पीढ़ियों की भलाई या असफलता इसी में छिपी हुई है।

यहाँ भी मैं अपनी बातें पेश नहीं करूँगा, बल्कि ईश्वर की पुस्तक से उसकी बातें पेश करूँगा। उसमें ईश्वर ने यह बताया है कि किन-किन इनसानों को वह नापसन्द करता है, किन कर्मों से वह नाराज़ होता है और

किनको वह नरक में झोंक देगा। (ईश्वर हम सबको अपनी यातना एवं दण्ड से सुरक्षित रखे। आमीन!)

(1) वास्तविकता यह है कि जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते (अर्थात् ईश्वर और आख़िरत का इनकार करनेवाले हैं) और सांसारिक जीवन ही पर प्रसन्न और सन्तुष्ट हो गए हैं, और जो लोग हमारी निशानियों से अचेत हैं, उनका अन्तिम ठिकाना नरक होगा, उन बुराइयों के बदले में जिसकी कमाई वे (ग़लत आस्था और कर्म के कारण से) करते रहे।

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयतें-7-8)

(2) जो लोग बस इसी सांसारिक जीवन और उसकी मोहकता को पसन्द करते हैं, उनकी कारगुज़ारी का सारा फल हम यहीं उनको दे देते हैं, और उसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। मगर आख़िरत में ऐसे लोगों के लिए आग के सिवा कुछ नहीं है। (वहाँ मालूम हो जाएगा कि) जो कुछ उन्होंने संसार में बनाया वह सब मलियामेट हो गया और अब उनका सारा किया-धरा केवल झूठ है। (क़ुरआन, सूरा-11 हूद, आयतें-15-16)

(3) और देखो ईश्वर के साथ कोई दूसरा पूजनीय न बना बैठो, वरना तुमको नरक में डाल दिया जाएगा। उस समय तुम घृणित और हर भलाई से वंचित हो जाओगे। (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-39)

(4) यह (नरक) बदला है उन (लोगों) की उस हरकत व कर्म का कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और कहा, "क्या जब हम सिर्फ़ हड्डियाँ और मिट्टी होकर रह जाएँगे, तो नए सिरे से हमको पैदा करके उठाकर खड़ा किया जाएगा?" क्या उनको यह न सूझा कि जिस ईश्वर ने आकाश व धरती को पैदा किया है वे उन जैसों को पैदा करने की आवश्यक सामर्थ्य (क़ुदरत) रखता है? उसने उनके (मौत के बाद) उठाए जाने के लिए एक समय तय कर रखा है, जिसका आना निश्चित है, मगर अत्याचारियों को आग्रह कि वह उसका इनकार ही करेंगे।

(क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयतें-98-99)

(5) और (क़ियामत के दिन) नरक बहके हुए लोगों के सामने खोल

दिया जाएगा, और उनसे पूछा जाएगा कि "अब कहाँ हैं वे जिनकी तुम ईश्वर को छोड़कर उपासना करते थे? क्या वे तुम्हारी कुछ सहायता कर रहे हैं या स्वयं अपना बचाव कर सकते हैं?" फिर वे पूज्य और ये बहके हुए लोग और इबलीस की सेना सब-के-सब उसमें ऊपर-तले ढकेल दिए जाएँगे।" (क़ुरआन, सूरा-26 शुअरा, आयत-91 से 95)

(6) और जिन लोगों ने इनकार किया है (अर्थात् ईश्वर, उसके सन्देष्टा और आखिरत का इनकार किया है) उनके लिए नरक की आग है। न उनको नष्ट कर दिया जाएगा कि मर जाएँ और न उनके लिए नरक की यातना में कोई कमी की जाएगी। इस प्रकार हम बदला देते हैं हर उस व्यक्ति को जो इनकार करनेवाला हो। वे वहाँ चीख़-चीख़कर कहेंगे कि "ऐ हमारे पालनहार! हमें यहाँ से निकाल ले, ताकि हम अच्छे कर्म करें, उन कर्मों से भिन्न जो पहले करते थे।" (उन्हें उत्तर दिया जाएगा) "क्या हमने तुमको इतनी आयु न दी थी जिसमें कोई सीख लेना चाहता तो सीख ले सकता था? और तुम्हारे पास ख़बरदार करनेवाला भी आ चुका था। अब मज़ा चखो, अत्याचारियों का यहाँ कोई सहायक नहीं।" (क़ुरआन, सूरा-35 फ़ातिर, आयतें-36, 37)

(7) और जिन लोगों ने इनकार किया है और हमारी आयतों को झुठलाया है, वे नरक के बाशिन्दे (निवासी) होंगे जिसमें वे सदैव रहेंगे, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (क़ुरआन, सूरा-64 तग़ाबुन, आयत-10)

(8) वहाँ (आख़िरत के जीवन में) वे (स्वर्गीय) अपराधियों से पूछेंगे, "तुम्हें क्या चीज़ नरक में ले आई?" वे कहेंगे, "हम नमाज़ पढ़नेवालों में से नहीं थे, और ग़रीबों को खाना नहीं खिलाते थे, और सत्य के विरुद्ध बातें बनानेवालों के साथ मिलकर हम भी बातें बनाने लगते थे और बदले के दिन को झूठ बताते थे, यहाँ तक कि हमें इस विश्वसनीय चीज़ का सामना पेश आ गया।" उस समय सिफ़ारिश करनेवालों की सिफ़ारिश उनके किसी काम न आएगी। (क़ुरआन, सूरा-74 मुद्दस्सिर, आयतें-40 से 48)

(9) हमने इनसान को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, ताकि उसकी परीक्षा लें, और इस उद्देश्य के लिए हमने उसे सुनने और देखनेवाला बनाया।

हमने उसे मार्ग दिखा दिया, चाहे शुक्र करनेवाला बने या इनकार करनेवाला। इनकार करनेवालों के लिए हमने ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (क़ुरआन, सूरा-76 दह्र, आयतें-2 से 4)

(10) और हर देखनेवाले के सामने नरक खोलकर रख दी जाएगी, तो जिसने बुरे कर्म व सरकशी की थी और संसार के जीवन को प्राथमिकता दी थी, नरक ही उसका ठिकाना होगा।

(क़ुरआन, सूरा-79 नाज़िआत, आयतें-36 से 39)

(11) तबाही है उस दिन झुठलानेवालों के लिए जो बदले के दिन को झुठलाते हैं। और उसे नहीं झुठलाता, मगर हर वह व्यक्ति जो सीमा लांघ जानेवाला और बुरे कर्मवाला है। उसे जब हमारी आयतों को सुनाया जाता है तो कहता है, "ये तो पहले के समयों की कहानियाँ हैं।" कदापि नहीं, बल्कि वास्तव में उन लोगों के दिलों पर उनके बुरे कर्मों का जंग चढ़ गया है, कदापि नहीं, वास्तव में उस दिन ये अपने पालनहार (रब) को देखने से वंचित रखे जाएँगे, फिर ये नरक में जा पड़ेंगे, फिर उनसे कहा जाएगा कि यह वही चीज़ है जिसे तुम झुठलाया करते थे।

(क़ुरआन, सूरा-83 मुतफ़्फ़िफ़ीन, आयतें-10 से 17)

(12) जिन लोगों ने ईमानवाले मर्दों और औरतों पर अत्याचार किया और फिर उससे तौबा न की, वास्तव में उनके लिए नरक की यातना (अज़ाब) है और उनके लिए जलाए जाने का दण्ड है।

(क़ुरआन, सूरा-85 बुरूज, आयत-10)

(13) तुम लोगों को अधिक-से-अधिक और एक-दूसरे से बढ़कर संसार प्राप्त करने की धुन ने ग़फ़लत में डाल रखा है, यहाँ तक कि तुम (इसी चिंता में) क़ब्र के किनारे तक पहुँच जाते हो.....तुम नरक देखकर रहोगे।

(क़ुरआन, सूरा-102 तकासुर, आयतें-1 से 6)

(14) तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो (आमने-सामने) लोगों पर ताने मारने और (पीठ पीछे) बुराइयाँ करने का अभ्यस्त है, जिसने माल इकट्ठा किया और उसे गिन-गिनकर रखा। वह समझता है कि उसका माल

व धन सदैव उसके पास रहेगा। कदापि नहीं, वह व्यक्ति तो चूर-चूर कर देनेवाले स्थान में फेंक दिया जाएगा।

(क़ुरआन, सूरा-104 हु-मज़ा, आयतें-1 से 4)

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

तनिक शान्त और उदार मन-मस्तिष्क से इन बातों पर विचार कीजिए। मृत्यु के पश्चात् आनेवाले जीवन में नरक की उस यातना से हममें से हर कोई बचना चाहेगा। उससे बचने की चिन्ता और प्रबन्ध करने का स्थान यही हमारा सांसारिक जीवन है जो तीव्र गति से गुज़रता जा रहा है। वहाँ हमारा सबसे बड़ा अपराध जो हमें बताया जा रहा है वह यह होगा कि हमने आनेवाले जीवन को असम्भव समझा, उसका इनकार किया। ईश्वर का दिया हुआ भोजन खाया, मगर उसी का इनकार किया। ईश्वर का दिया हुआ जीवन गुज़ारा, मगर उसे छोड़कर दूसरों को अपना पूज्य बनाया। मनमाना जीवन गुज़ारा, संसार ही को सब कुछ समझकर मग्न रहे, उसके धन को जमा करने में लालच का शिकार हुए जबकि एक दिन सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है। इसलिए अगर हमें नरक की कठोर यातना से स्वयं को और अपनी सन्तान को बचाना है तो अभी भी हमारे लिए समय है, अवसर है, जो फिर मिलनेवाला नहीं। क्या हम चाहेंगे कि हमारे बच्चों, माँ, बीवी और ख़ुद हमको ईश्वर प्रेम की दृष्टि से न देखे और नरक के हवाले कर दे? नहीं, हरगिज़ नहीं, हम तो चाहेंगे कि हमें या हमारे प्रियजनों की उंगली को भी आग न छुए, मगर जब सच्चाई सामने आ जाएगी, नरक हमारे सामने खोल दिया जाएगा और हमारे अपराध हमारे सामने सुना दिए जाएँगे, उस समय पछताने से कुछ प्राप्त न होगा।

मेरे प्रिय भाई/बहन! आज अवसर हमारे हाथ में है, स्वर्ग और नरक को झुठलाने के लिए हमारे पास कोई प्रमाण नहीं। ईश्वर ने हमें जीवन दिया। हमने स्वयं नहीं कमाया। उसी ने हमें बताया कि मैं एक और जीवन देकर तुम्हारी परीक्षा लूँगा और पिछले जीवन के सारे कर्मों का हिसाब लूँगा। तो फिर हमें झुठलाने का अधिकार कहाँ से मिल गया? ईश्वर ने तो अपने

सन्देशवाहकों को भेजकर स्पष्ट रूप से बता दिया, और उसकी पुस्तक संसार में मौजूद है। अगर हम झुठलाते हैं तो घाटा हमारा है। आज हम स्वस्थ हैं, जब मृत्यु हमारे समक्ष आ जाएगी तो हमारे हाथ-पाँव हमारे कंट्रोल से निकल जाएँगे, हमारी जान कंठ में आ जाएगी तब उस समय पलटने और ईश्वर को मान लेने का इरादा कर लेने का कोई लाभ नहीं? फिर एक बार अकेले में विचार कीजिए और एक अच्छा फ़ैसला कीजिए। ईश्वर मेरा और आपका सहायक हो! (आमीन!)

पत्र (10)

अपार प्रेम करनेवाले रचयिता की पुकार

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे से अपार प्रेम करती है और उसे हर कष्ट से बचाती है, वह नहीं चाहती कि उसके दिल के टुकड़े को चींटी भी काटे। हमारा रचयिता माँ से अधिक हमसे प्रेम करता है। वह नहीं चाहता कि हम आग में डाले जाएँ। इसी लिए वह हमें हर तरह से समझाता और सचेत करता है कि हम नरक से बचें और स्वर्ग के भागी बनें। जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को समझाती है कि बेटा! परिश्रम करो वरना परीक्षा में असफल हो जाओगे उसी प्रकार हमारा स्वामी अन्दाज़ बदल-बदलकर हमें समझाता है। वह अपनी पवित्र पुस्तक में कभी डराकर, कभी लालच देकर हमें उस मार्ग की ओर आने को कहता है जिसकी मंज़िल आख़िरत की सफलता, नरक से मुक्ति और स्वर्ग में प्रवेश है।

इस पड़ाव पर हमारे मन में यह प्रश्न आ सकता है कि अगर वह चाहे तो हमें वैसे भी तो स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है, चाहे हम कितने ही बड़े अपराधी क्यों न हों? इसका उत्तर यह है कि उसने मनुष्य को बुद्धि और विवेक दिया और सही-ग़लत में अन्तर करने की योग्यता दी। चुनने की स्वतंत्रता दी, इसके बावजूद अगर उसने बुद्धि का प्रयोग न किया, ग़लत को पसन्द किया और अपनी स्वतंत्रता को ग़लत मार्गों में इस्तेमाल किया, लोगों का अधिकार छीना, किसी कमज़ोर पर अत्याचार किया और मासूमों की बद्दुआएँ लीं तो स्पष्ट है ईश्वर अन्यायी तो है नहीं कि अत्याचारी और पीड़ित को एक ही स्थान पर इकट्ठा कर दे।

मनुष्य को बुद्धि एवं विवेक देने के अतिरिक्त ईश्वर ने अपने

सन्देष्टाओं को भेजा, जिन्होंने मनुष्य का मार्गदर्शन किया और उसे सीधा रास्ता दिखाया। उसने पुस्तकें अवतरित कीं। सबसे अन्तिम और प्रमाणित पुस्तक क़ुरआन है, जिसमें हमारे स्वामी ईश्वर ने एक माँ से ज़्यादा हमें समझाया है। अच्छे कर्म पर पुरस्कारों का शुभ समाचार सुनाया। ग़लत मार्ग पर चलने के दुष्परिणाम से डराया है। हर प्रकार से उदाहरण दे-देकर अपनी ओर बढ़ने को कहा है। क्या हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम उनपर विचार करें? उसकी अन्तिम पुस्तक क़ुरआन से कुछ उद्धरण सामने रखता हूँ। देखिए वह कितने सुन्दर अन्दाज़ में, कितनी सहानुभूति और प्यार से हमें समझा रहा है। इन आयतों में वह अलग तरह से एक-एक मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से और समस्त मानव-जाति को सामूहिक रूप से कहता है। स्पष्ट रहे कि यहाँ वह मनुष्यों के किसी विशेष समूह, या विशेष धर्म के लोगों से नहीं कहता है, बल्कि वह अपने समस्त बन्दों से कहता है और पुकार रहा है कि ऐ इनसानो! ऐ मेरे बन्दो!

(1) जब आकाश फट पड़ेगा और जब तारे व नक्षत्र बिखर जाएँगे और जब समुद्र फाड़ दिए जाएँगे और जब क़ब्रें खोल दी जाएँगी, उस समय हर व्यक्ति को उसका अगला-पिछला सब किया-धरा पता चल जाएगा। ऐ इनसान! किस चीज़ ने तुझे अपने उस दयालु व उदार पालनहार की ओर से धोके में डाल दिया, जिसने तुझे पैदा किया, तुझे नख-सिख से ठीक किया, तुझे सन्तुलित बनाया और जिस रूप में चाहा तुझको जोड़कर तैयार किया (अपने ऐसे निर्माता को छोड़कर तू कहाँ जा रहा है?)?

(क़ुरआन, सूरा-82 इनफ़ितार, आयतें-1 से 8)

(2) ऐ इनसान! तू ज़बरदस्ती खिंचते हुए अपने पालनहार की ओर चला जा रहा है और उससे मिलनेवाला है (फिर क्यों तू इसकी तैयारी नहीं करता?)। (क़ुरआन, सूरा-84 इनशिक़ाक़, आयत-6)

(3) ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने उस पालनहार की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं उन सबका पैदा करनेवाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है। वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया, आकाश की छत बनाई, ऊपर से वर्षा अवतरित की और

उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार निकालकर तुम्हारे लिए जीविका जुटाई। अतः जब तुम यह जानते हो तो दूसरों को ईश्वर का प्रतिद्वंद्वी (समकक्ष) न ठहराओ। (क़ुरआन, सूरा-2 बक़रा, आयतें-21-22)

(4) लोगो! अपने रब (पालनहार) से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ संसार में फैला दिए। उसी ईश्वर से डरो जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे से अपने अधिकार माँगते हो, और रिश्ते-नातों के सम्बन्धों को बिगाड़ने से बचो। सच जानो कि ईश्वर तुमपर दृष्टि बनाए हुए है। (क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-1)

(5) लोगो! ये पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से हक़ व सच लेकर आ गया है, ईमान ले आओ, तुम्हारे ही लिए अच्छा है, और अगर इनकार करते हो तो जान लो कि आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब ईश्वर का है, और ईश्वर सब कुछ जाननेवाला भी है और गहरी समझवाला भी। (क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-170)

(6) लोगो! तुम्हारे रब (पालनहार) की ओर से तुम्हारे पास खुला प्रमाण (अर्थात् क़ुरआन और पैग़म्बर सल्ल॰) आ गया है। और हमने तुम्हारी ओर से ऐसी रौशनी व प्रकाश भेज दिया है जो तुम्हें साफ़-साफ़ मार्ग दिखानेवाला है, अब जो लोग ईश्वर की बात मान लेंगे, और उसकी शरण लेंगे, उनको ईश्वर अपनी दया और मेहरबानी के दामन में ले लेगा और अपनी ओर आने का सीधा मार्ग उनको दिखा देगा।

(क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयतें-174-175)

(7) (ऐ मुहम्मद!) कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस ईश्वर का पैग़म्बर हूँ जो धरती और आकाशों की बादशाही का स्वामी है। उसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। वही जीवनदाता है और वही मृत्युदाता है, अतः ईमान लाओ ईश्वर पर और उसके भेजे हुए उम्मी नबी (सल्ल॰) पर जो ईश्वर और उसके उपदेशों को मानता है, और पैरवी करो उसकी, आशा है कि तुम सत्य-मार्ग पा लोगे। (क़ुरआन, सूरा-7 आराफ़, आयत-158)

(8) लोगो! तुम्हारी ये बग़ावत (विद्रोह) तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रही है। संसार के जीवन के कुछ दिनों के मज़े हैं (लूट लो), फिर हमारी ओर तुम्हें पलटकर आना है, उस समय हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे हो। (क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-23)

(9) लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब (पालनहार) की ओर से नसीहत (हितोपदेश) आ गई है। यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों का उपचार है और जो उसे स्वीकारे उनके लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-57)

(10) (ऐ मुहम्मद!) कह दो कि लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अब जो सीधा-मार्ग पकड़ेगा उसका मार्ग उसी के लिए लाभदायक है, और जो पथभ्रष्ट रहे उसकी पथभ्रष्टा उसी के लिए तबाह करनेवाली (विनाशकारी) है, और मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूँ।

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-108)

(11) लोगो! अपने रब (पालनहार) के ग़ुस्से से बचो, वास्तविकता यह है कि क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी (हौलनाक) चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि हर दूध पिलानेवाली अपने दूध पीते बच्चों से ग़ाफ़िल हो जाएगी, हर गर्भवति का गर्भ गिर जाएगा और लोग तुमको मदहोश नज़र आएँगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि ईश्वर का अज़ाब ही कुछ ऐसा कठोर है।

कुछ लोग ऐसे हैं जो ज्ञान के बिना ईश्वर के विषय में बहसें (विवाद) करते हैं, और हर सरकश शैतान की पैरवी करने लगते हैं। हालाँकि उसके (शैतान के) तो भाग में ही यह लिखा है कि जो उसको मित्र बनाएगा उसे वह पथभ्रष्ट करके छोड़ेगा और नरक की यातना का मार्ग दिखाएगा।

(क़ुरआन, सूरा-22 हज, आयतें-1 से 4)

(12) लोगो! अगर तुम्हें जीवन के पश्चात् मृत्यु के विषय में कुछ सन्देह है तो तुम्हें पता हो कि हमने तुमको मिट्टी से पैदा किया है, फिर बूंद (वीर्य) से......और वह मृत को जीवन देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त

है, और यह (इस बात का प्रमाण है) कि क़ियामत की घड़ी आकर रहेगी, इसमें किसी सन्देह की गुंजाइश नहीं, और ईश्वर अवश्य उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में जा चुके हैं। (क़ुरआन, सूरा-22 हज, आयतें-5 से 7)

(13) ऐ नबी! कह दो कि ऐ लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए केवल वह व्यक्ति हूँ जो (बुरा समय आने से पहले) साफ़-साफ़ ख़बरदार करनेवाला हो, फिर जो ईमान लाएँगे और नेक कर्म करेंगे उनके लिए मग़फ़िरत (माफ़ी) है और सम्मानपूर्ण आजीविका। और जो हमारी निशानियों को नीचा दिखाने का प्रयास करेंगे वे नरक के भागी हैं।

(क़ुरआन, सूरा-22 हज, आयतें-49 से 51)

(14) लोगो! एक उदाहरण दिया जाता है, ध्यान से सुनो। जिन पूज्यों को तुम ईश्वर को छोड़कर पुकारते हो वे सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा करना चाहें तो नहीं कर सकते, बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई वस्तु छीन ले जाती है, वह भी उसे छुड़ा नहीं सकते। सहायता चाहनेवाले भी दुर्बल और जिनसे सहायता चाही जाती है वे भी दुर्बल। इन लोगों ने ईश्वर की क़द्र ही न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का अधिकार है, वास्तविकता यह है कि शक्ति और सम्मानवाला तो ईश्वर ही है।

(क़ुरआन, सूरा-22 हज, आयतें-73-74)

(15) लोगो! बचो अपने पालनहार के प्रकोप से और डरो उस दिन से जब कोई बाप अपने बेटे के काम न आएगा और न कोई बेटा ही अपने बाप के काम आनेवाला होगा। वास्तव में ईश्वर का वादा सत्य है। अतः यह संसार का जीवन तुम्हें धोके में न डाले और न धोकेबाज़ (शैतान) तुमको ईश्वर के विषय में धोका देने पाए। (क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयत-33)

(16) लोगो! तुमपर ईश्वर के जो परोपकार हैं उन्हें स्मरण करो। क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोई और निर्माता भी है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी (आजीविका) प्रदान करता हो? — कोई पूज्य उसके अतिरिक्त नहीं। आख़िर तुम कहाँ से धोका खा रहे हो?

(क़ुरआन, सूरा-35 फ़ातिर, आयत-3)

(17) लोगो! ईश्वर का प्रण (वादा) वास्तव में सत्य है, इसलिए संसार का जीवन तुम्हें धोके में न डाले, और न बड़ा धोकेबाज़ (शैतान) तुम्हें ईश्वर के विषय में धोका देने पाए। वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है इसलिए तुम भी उसे अपना शत्रु ही समझो। वह तो अपने अनुयायियों को अपने मार्ग पर इसलिए बुला रहा है कि वे नारकियों में सम्मिलित हो जाएँ। जो लोग इनकार करेंगे उनके लिए कठोर यातना है और जो ईमान लाएँगे और अच्छे कर्म करेंगे उनके लिए मग़फ़िरत (माफ़ी) और बड़ा बदला है।

(क़ुरआन, सूरा-35 फ़ातिर, आयतें-5 से 7)

(18) लोगो! तुम ही ईश्वर के मुहताज हो और ईश्वर तो सम्पन्न और प्रशंस्य है। वह चाहे तो तुम्हें हटाकर कोई नई ख़लक़त (जन-समूह) तुम्हारी जगह ले आए, ऐसा करना ईश्वर के लिए कुछ भी कठिन नहीं। (क़ियामत के दिन) कोई बोझ उठानेवाला किसी अन्य का बोझ न उठाएगा। और अगर कोई लदी हुई जान (प्राणी) अपना बोझ उठाने के लिए पुकारेगा तो उसके बोझ का एक छोटा हिस्सा भी हटाने के लिए कोई न आएगा चाहे वह निकटतम सम्बन्धी ही क्यों न हो। (ऐ नबी!) तुम केवल उन्हीं लोगों को ख़बरदार कर सकते हो जो बिना देखे अपने रब (पालनहार) से डरते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं। जो व्यक्ति भी पवित्रता अपनाता है, अपने ही कल्याण के लिए करता है। और पलटना सबको ही ईश्वर की ओर है।

(क़ुरआन, सूरा-35 फ़ातिर, आयतें-16 से 18)

(19) लोगो! हमने तुमको एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया, और फिर तुम्हारे समुदाय और बिरादरियाँ बना दीं, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में ईश्वर की दृष्टि में तुममें से अधिक सम्मानित वह है जो तुममें सबसे अधिक परहेज़गार है। वास्तव में ईश्वर सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है। (क़ुरआन, सूरा-49 हुजुरात, आयत-13)

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

आपने अपने रचयिता और स्वामी की प्रेम-भरी बातें सुनी। जैसे कोई माँ अपने बच्चे को समझा रही हो, जैसे कोई बाप अपने बच्चे को बचाने का

प्रयास कर रहा हो जो ख़तरनाक शत्रु की ओर जा रहा हो। और वह शत्रु शैतान है जो मनुष्य को अपने साथ नरक में ले जाना चाहता है। जबकि हमारा रचयिता हमें उस मार्ग पर लाना चाहता है जिसकी मंज़िल स्वर्ग है। और यह काम वह ज़बरदस्ती नहीं करता, बल्कि इनसान की बुद्धि एवं विवेक, उसकी स्वाभाविक शराफ़त और भलाई को पसन्द करने की उसकी प्रवृत्ति को अपील करके करता है। स्पष्ट बात है कि इसी की परीक्षा तो वह ले रहा है। वह चाहता है कि हम बिना देखे उसकी दी हुई बुद्धि, विवेक, सोचने-समझने की योग्यता और सत्य को पहचानने के स्वाभाविक गुण इस्तेमाल में लाकर उसकी प्रसन्नता और पुरस्कार के हक़दार बनें। इसी लिए उसने हम को ऐसी योग्यताएँ दीं। अपने पैग़म्बरों को भेजा, पुस्तकें भेजीं और अपनी अन्तिम पुस्तक क़ुरआन मजीद को क़ियामत तक सुरक्षित रखने का प्रबन्ध कर दिया। ताकि क़ियामत तक आनेवाला हर व्यक्ति इससे लाभ उठाए। इस प्रकार वह सदैव-सदैव के सुखद जीवन के मार्ग पर आ जाए जिसकी मंज़िल सफलता, मुक्ति और ईश्वर की प्रसन्नता है। अब वह पथ कौन-सा है? इसके विषय में, मैं अगले पत्र में आपको बताऊँगा। ईश्वर हम सभी को उस पथ पर चलनेवाला बनाए। (आमीन!)

पत्र (11)

सफलता और मुक्ति किस तरीक़े में है?

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

पिछले सभी पत्रों को पढ़ने के बाद आपको आभास हो गया होगा कि आख़िरत की सफलता और मुक्ति के लिए ईश्वर के बताए हुए उपाय के अनुसार जीवन-गुज़ारना और इसी प्रयास में अपनी अन्तिम सांस तक लगे रहना अनिवार्य है। ईश्वर के बताए हुए मार्ग को साधारण भाषा में धर्म कहते हैं और मनुष्य के संसार में आने से लेकर अब तक मनुष्यों ने कई धर्म बना लिए हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि आख़िर मनुष्य कौन-सा धर्म अपनाए और किस धर्म की शिक्षाओं पर अमल करे? उन धर्मों में हम सबके रचयिता का पसन्दीदा और भेजा हुआ धर्म कौन-सा है? उसकी खोज हमारी स्वयं की ज़िम्मेदारी है।

मेरे भाई और बहन! ज़रा विचार कीजिए यह हमारे जीवन और मृत्यु का प्रश्न है, बल्कि जीवन की सफलता व विफलता का प्रश्न है। मान लीजिए कि अगर मैं रोगग्रस्त हो जाऊँ और उसकी औषधि किसी अन्य समुदाय के व्यक्ति के पास हो तो क्या मैं उसका सेवन नहीं करूँगा?

धर्म तो मनुष्यों ने स्वयं बना लिए हैं, ईश्वर ने तो आरम्भ से एक ही जीवन के ढंग को बताया था, हज़ारों पैग़म्बरों को भेजकर और पुस्तकों को अवतरित करके, मगर समय के साथ उनकी मूल शिक्षाओं को भुलाकर, अपनी ओर से ईश्वरीय शिक्षाओं में कमी व ज़्यादती करके एक से अधिक धर्मों को गढ़ लिया गया। और उन्होंने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिए कि हम केवल अपने गढ़े व पैदा किए धर्म पर चलेंगे, चाहे वह ग़लत ही हो। जबकि वास्तविक बात यह है कि सृष्टि व कायनात का प्रारम्भ से केवल एक

ही धर्म और एक ही जीवनशैली थी और क़ियामत तक सही मार्ग एक ही रहेगा, केवल उसे पहचानने, अपनाने और उसपर अमल करने की आवश्यकता है। आइए ईश्वर की पुस्तक से इस सच्चाई को जानने का प्रयास करें–

(1) प्रारम्भ में सभी मनुष्य एक ही ढ़ंग (तरीक़े) पर थे। (फिर यह दशा बाक़ी न रही और मतभेद पैदा हुए) तब ईश्वर ने सन्देष्टाओं को भेजा जो सच्चाई के मार्ग पर शुभ समाचार सुनानेवाले, टेढ़े और ग़लत मार्ग के परिणामों से डरानेवाले थे, और उनके साथ सच्ची किताब अवतरित की, ताकि सच्चाई व वास्तविकता के विषय में लोगों के बीच जो मतभेद उत्पन्न हो गए थे, उनका फ़ैसला करे। (और उन मतभेदों के उत्पन्न होने का कारण यह नहीं था कि प्रारम्भ में लोगों को सत्य बताया नहीं गया था, बल्कि) मतभेद उन लोगों ने किया, जिन्हें सच्चाई का ज्ञान दिया जा चुका था। उन्होंने स्पष्ट आदेश पा लेने के पश्चात् केवल इसलिए सत्य को छोड़कर विभिन्न उपाय खोजे कि वे आपस में ज़्यादती करना चाहते थे। अतः जो लोग सन्देष्टाओं पर ईमान ले आए, उन्हें ईश्वर ने अपनी अनुमति से उस सत्य के मार्ग को दिखा दिया, जिसमें लोगों ने मतभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है।

(क़ुरआन, सूरा-2 बक़रा, आयत-213)

ईश्वर ने संसार के आरम्भ से हर युग और हर समुदाय और हर समय केवल एक ही धर्म और एक ही सच्चाई की ओर बुलानेवाले सन्देष्टा भेजे और उसी के आदेश पर चलने के लिए उपदेशों व पुस्तकों को अवतरित किया, मगर बाद के लोगों ने उन शिक्षाओं को भुला दिया।

(2) उसने (अर्थात् ईश्वर ने) तुम्हारे लिए दीन का वही तरीक़ा तय किया है जिसका आदेश उसने नूह को दिया था, और जिसे (ऐ मुहम्मद!) अब तुम्हारी ओर हमने वह्य (प्रकाशना) के माध्यम से भेजा है, और जिसका निर्देश हम इबराहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इसकी ताकीद करने के साथ कि क़ायम करो उस दीन को और उसमें अलग-अलग न हो जाओ।

(क़ुरआन, सूरा-42 शूरा, आयत-13)

ईश्वर की पुस्तक तो यह बताती है कि संसार की हर वस्तु, जिसे उसने पैदा किया वह अपने रचयिता के बनाए हुए नियम और क़ानून के अनुसार अमल किए जा रही है। दूसरे अर्थ में वह ईश्वर के दीन पर अमल कर रही है। जबकि इनसान को अमल की स्वतंत्रता दी गई, अगर वह भी अपने ईश्वर को पहचाने और पैग़म्बरों की सही शिक्षाओं पर अमल करते हुए जीवन गुज़ारे तो उसका सृष्टि की समस्त रचनाओं के साथ समन्वय स्थापित हो जाता है और इसका परिणाम सफलता है। अगर इसके विरुद्ध वह किसी तरीक़े या उपाय पर जीवन गुज़ारना चाहे तो वह ईश्वर के पास अस्वीकार भी है और आख़िरत के जीवन की असफलता भी उसका भविष्य होगी। ये बात दोटूक अन्दाज़ में ईश्वर की किताब में वर्णित है।

(३) अब क्या ये लोग ईश्वर की फ़रमाँबरदारी का तरीक़ा (अल्लाह का दीन) छोड़कर कोई और तरीक़ा चाहते हैं? हालाँकि आकाश व धरती की सारी वस्तुएँ चाहे-अनचाहे ईश्वर ही की फ़रमाँबरदारी करनेवाली (आज्ञाकारी अर्थात् मुस्लिम) हैं, और उसी की ओर सबको पलटना है। ऐ नबी! कहो कि "हम ईश्वर को मानते हैं, उसकी शिक्षा निर्देशों पर भी ईमान रखते हैं जो हमपर अवतरित की गईं, उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इबराहीम, इसहाक़ और याक़ूब की सन्तानों पर अवतरित हुई थीं, और उन निर्देशों पर भी ईमान रखते हैं जो मूसा और ईसा और दूसरे सन्देष्टाओं को उनके रब (पालनहार) की ओर से दिए गए। हम उनके बीच अन्तर नहीं करते और हम ईश्वर के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।" उस फ़रमाँबरदारी (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई और तरीक़ा अपनाएगा उसका वह तरीक़ा कदापि स्वीकार न किया जाएगा और आख़िरत में वह असफल रहेगा।

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतें-83 से 85)

अब प्रश्न यह उठता कि किस पैग़म्बर, सन्देष्टा और किस मार्गदर्शक की बात मानी जाए और कौन-सा धर्म अपनाया जाए ताकि सफलता हमारा भविष्य हो और दूसरे जीवन में मुक्ति और ईश्वर की प्रसन्नता हमें प्राप्त हो? इसका उत्तर यह है कि हर सन्देष्टा की बातें ठीक थीं और एक जैसी थीं, मगर बाद के लोगों ने या तो उन्हें भुला दिया या उनमें मिलावट करके अलग-

अलग धर्म बना लिए। इसलिए ईश्वर ने सबसे अन्त में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अपना अन्तिम सन्देशवाहक बनाकर भेजा और उसी दीन को फिर से अवतरित किया जो आरम्भ से एक ही सच्चा दीन है, और फिर उसे सुरक्षित रखने की व्यवस्था भी कर दी। आज यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि ईश्वर ने सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर जो अन्तिम पुस्तक (क़ुरआन) अवतरित की, सदियाँ बीत जाने के बाद भी उसमें एक शब्द का भी हेर-फेर नहीं हुआ।

यह कोई नया धर्म नहीं है जिसे सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने पहली बार सामने रखा हो, बल्कि मनुष्य की उत्पत्ति से (पृथ्वी पर पहले मनुष्य हज़रत आदम अलैहि॰ के युग से) यही धर्म था और सदैव के लिए यही रहेगा।

मेरे प्रिय भाई/बहन! आपके हृदय एवं आत्मा और आपकी बुद्धि एवं समझ को सम्बोधित करके एक शुभचिंतक के रूप में मैंने ये बातें कही हैं। जीवन के प्रश्नों को समझना और उन्हें हल करना हमारी आधारभूत आवश्यकता और ज़िम्मेदारी है। इस सम्बन्ध में ईश्वर की अन्तिम पुस्तक क़ुरआन और सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की जीवनी आपका मार्गदर्शन कर सकती है। इसका गम्भीरता और निश्छलता से अध्ययन करना हमारी ज़िम्मेदारी है। कोई भी सत्य और सफलता की बात समस्त मानव-जाति (इनसानियत) की पूँजी है।

ईश्वर मेरा और आपका संरक्षक और सहायक हो!

पत्र (12)

अन्तिम बात

मेरे प्यारे भाई/प्यारी बहन!

मेरे पिछले सारे पत्रों और सारे संवाद का उद्देश्य यह है कि हम समस्त मानव-जाति का सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करें और निर्णय उनकी इच्छा पर छोड़ दें। किसी के हृदय को बलपूर्वक किसी बात पर सन्तुष्ट कर देने की योग्यता किसी मनुष्य में नहीं है। स्वयं सन्देष्टाओं ने भी समस्त मानव-जाति को उस मार्ग पर लाने के लिए बलपूर्वक कार्रवाई नहीं की, न ही हर सन्देष्टा को इसमें पूरी सफलता प्राप्त हुई।

यह एक प्रयास मात्र है जो हर युग में हर मनुष्य के समक्ष रखने की आवश्यकता है। अब आगे उसकी इच्छा है कि वह उसे अपनाए या ठुकरा दे। स्वयं ईश्वर ने भी अपनी अन्तिम पुस्तक क़ुरआन में यही बात कही है—

"जो कोई शुक्र करे उसका शुक्र करना उसके स्वयं के लिए लाभदायक है। और जो इनकार करे तो वास्तव में ईश्वर बेनियाज़ (निस्पृह) है, और आप-से-आप प्रशंसित है। (क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयत-12)

मेरा आपसे निवेदन है कि एक बार इसपर गम्भीरता से विचार करें। यह जीवन नष्ट होनेवाला है, कब समाप्त हो जाए कुछ पता नहीं। हमें यह भी नहीं पता कि हम कहाँ से आए हैं और हमको कहाँ जाना है? हमें किसने इस संसार में भेजा है और हमसे क्या चाहता है? बस सन्देष्टाओं ने बताया तो पता चला। उनकी लाई हुई पुस्तकों में पढ़ा तो पता चला।

ईश्वर से प्रार्थना है कि अपने मार्ग की ओर हमारा मार्गदर्शन करे और हमारी सहायता करे!

—■—